This question paper contains 4+2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5431**

Unique Paper Code : **205555** **E**

Name of the Paper : **Natak Ekanki Evam Nibandh**

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi Discipline**

Semester : V

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7+7+7=21

(क) आह, जीवन की क्षणभंगुरता देखकर भी मानव कितनी गहरी नींव देना चाहता है । आकाश के नीले पत्र पर उज्ज्वल अक्षरों से लिखे अदृष्ट के लेख जब धीरे-धीरे लुप्त होने लगते हैं, तभी तो मनुष्य प्रभात समझने लगता है, और जीवन-संग्राम में प्रवृत्त होकर अनेक अकांड-तांडव करता है । फिर भी प्रकृति उसे अंधकार की गुफा में ले जाकर उसका शांतिमय, रहस्यपूर्ण भाग्य का चिट्ठा समझाने का प्रयत्न करती है; किन्तु वह कब मानता है ? मनुष्य व्यर्थ महत्व की आकांक्षा में मरता-मरता है; अपनी नीची, किन्तु सुदृढ़ परिस्थिति में उसे संतोष नहीं होता; नीचे से ऊँचे चढ़ना ही चाहता है, चाहे फिर गिरे भी तो क्या ?

P.T.O.

अथवा

उस कटुता को केवल तुम्हीं दूर कर सकती हो, मल्लिका ! अवसर किसी की प्रतीक्षा नहीं करता । कालिदास यहाँ से नहीं जाते हैं, तो राज्य की कोई हानि नहीं होगी । राजकवि का आसन रिक्त नहीं रहेगा । परन्तु कालिदास जो आज है, जीवन-भर वही रहेंगे – एक स्थानीय कवि ! जो लोग आज ऋतु-संहार की प्रशंसा कर रहे हैं, वे भी कुछ दिनों में उन्हें भूल जाएँगे ।

अथवा

जीवन के आदि और उत्कर्ष के बीच एक और सीढ़ी है– जीवन का पुरुषार्थ । अपराध क्षमा हो आचार्य, आपकी कला उस पुरुषार्थ को भूल गयी है । जब मैं इन मूर्तियों में बँधे रसिक जोड़ों को देखता हूँ तो मुझे याद आती है पसीने में नहाते हुए किसान की, कोसों तक धारा के विरुद्ध नौका को खेने वाले मल्लाह की, दिन-दिन भर कुल्हाड़ी लेकर खटने वाले लकड़हारे की । .... इनके बिना जीवन अधूरा है, आचार्य । लेकिन कला नहीं । कला की पूर्ति चयन में है– छाँटने में । जंगल में तरह-तरह के फूल, पौधे, चाहे जहाँ उगे रहते हैं, लेकिन उपवन में माली छाँट-छाँट कर सुंदर और मनमोहक पौधों और वृक्षों को ही रखता है ।

(ख) तार टूट जाता है, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, यह भीतर से कहाँ पाऊँ ? अपनी उदासी से ऐसा चिपकाव अपने संकरे-से दर्द से ऐसा रिश्ता, राम को अपना कहने के लिए केवल उनके लिए भरा हुआ हृदय कहाँ पाऊँ ? मैं शब्दों के घने जंगलों में हिरा गया हूँ । जानता हूँ इन्हीं जंगलों के आसपास किसी टेकड़ी पर राम की पर्णकुटी है, पर इन उलझाने वाले शब्दों के अलावा मेरे पास कोई राह नहीं । शायद सामने उपस्थित अपने ही मनोराज्य के युवराज, अपने बचे-खुचे स्नेह के पात्र, अपने भविष्यत के संकट की चिंता में राम के निर्वासन को जो ध्यान आ जाता है, उनसे भी अधिक एक बिजली से जगमगाते शहर में एक पढ़ी-लिखी चंद दिनों की मेहमान लड़की के एक रात कुछ देर से लौटने पर अकारण चिन्ता हो जाती है । उसमें सीता का ख्याल आ जाता है, वह राम के मुकुट या सीता के सिन्दूर के भीगने की आशंका से जोड़े न जोड़े, आज की दरिद्र अर्थहीन, उदासी को कुछ ऐसा अर्थ नहीं दे देता, जिससे जिंदगी ऊब से कुछ उबर सके ?

अथवा

सराय के भटियारे बुलबुलें पकड़ा करते थे । गाँव के लड़के उनसे दो-दो, तीन-तीन पैसे में खरीद लाते थे पर बालक शिवशंभु तो ऐसा नहीं कर सकता था ।

पिता की आज्ञा बिना वह बुलबुल कैसे लावे और कहाँ रखे ? उधर मन में अपार इच्छा थी कि बुलबुल जरूर हाथ पर हो । इसी से जंगल में उड़ती बुलबुल को देखकर जी फड़क उठता था । बुलबुल की बोली सुनकर आनंद से हृदय नृत्य करने लगता था । कैसी-कैसी कल्पनाएँ हृदय में उठती थीं । उन सब बातों का अनुभव दूसरों को नहीं हो सकता । दूसरों को क्या होगा ? आज वही शिवशंभु है । स्वयं इसी को उस बालकाल के अनिर्वचनीय चाव और आनन्द का अनुभव नहीं हो सकता ।

(ग) भारतीय साहित्य की एकता पर जोर देने की आवश्यकता इसलिए भी है कि आज संसार के समक्ष भविष्य की स्थिति बहुत कुछ डावांडोल हो गई है । विघटन की शक्तियाँ इतनी बलवती हो गयी हैं कि यह नहीं समझ पड़ता कि नया विकास और नया संगठन किस प्रकार होगा । नई सभ्यता के इस संक्रांतिकाल में भारतवर्ष अपना संतुलन खो दे, यह उचित न होगा । इसके विपरीत यह अधिक आवश्यक है कि वह अपने साहित्य, अपनी कला और अपने जीवन दर्शन द्वारा संसार को एक नया आलोक अथवा एक नवीन दिशा ज्ञान देने की चेष्टा करें । संसार के बड़े-बड़े विचारक भी आज प्रकाश के लिए इधर-उधर टोह लगा रहे हैं । उनमें कुछ की यह भी धारणा है कि भारतीय साहित्य और भारतीय जीवन दर्शन उन्हें नया मार्ग निर्देश दे सकते हैं । ऐसी स्थिति में नई प्रगति को दौड़कर अपनाने की अपेक्षा अपने प्राचीन साहित्यिक वैभव की ओर दृष्टिपात करना अधिक अच्छा होगा ।

अथवा

आत्मबोध और जगद्‌बोध के बीच ज्ञानियों ने गहरी खाई खोदी पर हृदय ने कभी उसकी परवा न की; भावना दोनों को एक ही मानकर चलती रही । इस दृश्य जगत के बीच जिस आनंद-मंगल की विभूति का साक्षात्कार होता रहा है, उसी के स्वरूप की नित्य और चरम भावना द्वारा भक्तों के हृदय में भगवान के स्वरूप की प्रतिष्ठा हुई । लोक में इसी स्वरूप के प्रकाश को किसी ने 'राजराज्य' कहा, किसी ने आसमान की बादशाहत । यद्यपि मूसाइयों और उनके अनुगामी ईसाइयों की धर्म-पुस्तक में आदम को खुदा की प्रतिमूर्ति बताया गया, पर लोक के बीच नर में नारायण की दिव्य कला का सम्यक् दर्शन और उसके प्रति हृदय का पूर्ण निवेदन भारतीय भक्तिमार्ग में ही दिखायी पड़ा ।

2. हिंदी नाटक के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

हिंदी नाटक के विकास में जयशंकर प्रसाद के योगदान को स्पष्ट कीजिए ।

3. 'कोणार्क' नाटक का प्रतिपाद्य लिखिए । 15

अथवा

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के नारी पात्रों के वैशिष्ट्य पर विचार कीजिए ।

अथवा

रंगमंचीयता की दृष्टि से 'आषाढ़ का एक दिन' का विश्लेषण कीजिए ।

4. 'शिवाजी का स्वरूप' एकांकी के शिल्प की समीक्षा कीजिए । 8

अथवा

एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का मूल्यांकन कीजिए ।

5. हिंदी निबंध के उद्भव और विकास पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए । 8

अथवा

हिंदी निबंध के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान पर प्रकाश डालिए ।

6. 'देवदारु' निबंध के भाषिक-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए । 8

अथवा

नन्ददुलारे वाजपेयी के निबंधों की विशेषताएँ उद्घाटित कीजिए ।